Saathi

Date ___/___

रोम के भौगोलिक चिन्तन के विकास मे वहाँ के भूगोलविदो का क्या योगदान है।

रोम के भौगोलिक चिन्तन के विकास

यूनानी साम्राज्य के अन्त के साथ ही रोमन साम्राज्य का उदय ईसा पुर्व २० से ईसा पुर्व १८८ के मध्य हुआ

रोमन भूगोलवेताओ ने सैनिक और व्यावाहारिक अधेयानो से जो जानकारी प्राप्त की उसका उपयोग प्रसाशनिक और व्यापारिक समस्याओ के हल करने की किया। रोमन भूगोलवेता वर्णात्मक भूगोल द्वारा विभिन्न क्षेत्रो के भौगोलिक विवरण प्रस्तुत किये अधेयान मे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुऐ।

स्ट्रैबो (ईसा पुर्व ६४ से ईसा पुर्व २४ तक)

रोमन भूगोलवेताओ मे सबसे महत्वपुर्ण स्थान स्ट्रैबो का है। इनका जन्म टर्की के अमस्या क्षेत्र मे हुआ था। ये रोम मे बहुत वर्षो तक रहे। परन्तु इन्होने अपने कार्य अलेग्जेन्ड्रिया मे रहने के बाद किये। इन्होने अपने ग्रन्थ यूनानी भाषा मे लिखे इनका समय टालेमी से एक शताब्दी पुर्व का है। स्ट्रैबो रोमन होते हुए भी यूनानी भाषा मे ग्रन्थ लिखे

भूगोल की परिभाषा तथा उद्देश्य

भूगोल की परिभाषा तथा उद्देश्य के विषय मे स्ट्रैबो का कहना है। कि भूगोल का उद्देश्य केवल सामाजिक जीवन तथा सरकारी कामकाज मे सहायता देना मात्र ही नही है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

लोगो कि इस विश्व का आकाशीय पिण्डों तथा थल महासागर जीव जन्तुओं वनस्पतियों जलो और पृथ्वी की विभिन्न क्षेत्रों मे देखी जानेवाली प्रत्येक अन्य वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना है।

भौगोलिक विश्वकोश – स्ट्रैबो ने बसे हुये संसार के ज्ञात भाग का वर्णन 17 पुस्तकोमे भी भौगोलिक विश्वकोश के रूप मे संकलित किया यूरोप कि 6 पुस्तको मे एशिया का और अन्तिम पुस्तक मे अफ्रीका का भौगोलिक वर्णन किया अलेग्जेड्रिया मे उस समय संसार का सबसे बड़ा पुस्तकालय था जिसमे जाकर स्ट्रैबो ने यूनानी अरब तथा रोमन भाषा के ग्रन्थो का अध्ययन किया

प्रादेशिक भूगोल – स्ट्रैबो की पुस्तक मे स्पेन गॉल इटली उत्तरी और पूर्वी यूरोप यूनान एशिया माइनर पार्शिया भारत दजला-फरात प्रदेश सीरिया अरब सुदूर पूर्व तथा अफ्रीका के भौगोलिक वर्णन किया है। स्ट्रैबो मुख्यत: प्रादेशिक भूगोलवेत्ताओं था इस समय तक परिचित संसार का कितना बड़ा विस्तार हो चुका था

जनसंख्या अध्ययन – स्ट्रैबो ने लोगो के स्थानान्तरण का वर्णन किया है। और क्षेत्रो मे जनसंख्या मे विषमांगता तथा समांगता की भौगोलिक दशाओं के बारे मे बताया है। उनके मतानुसार यूरोप मे लोगो या जनसंख्या की बहुरूपी रचना हुई है। यूरोप एक ऐसा क्षेत्र है। जो मानवीय मस्तिष्क और समाज के उत्कृष्ट बनाने के लिए अनुकूलतम वातावरण प्रस्तुत है।

भौगोलिक भूगोल – स्ट्रैबो ने भौतिक भूगोल मे कुछ मौलिक अन्वेषण किये थे

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date ___/___/___

जैसे- समुद्री तटो तथा तटो से दूर स्थिति द्वीपो के बीच तलछटी जमातो के कारण धीरे धीरे थलीय सम्बन्ध स्थापित हो जाते है

भूगोल के विभिन्न पक्षो का वर्णन -

स्ट्रैबो ने कृषि की प्रगति के साथ साथ जनसंख्या सघनता के बढ़ने का वर्णन किया था उदाहरणार्थ - इसने भूमध्य सागरीय द्वीपो की सघन जनसंख्या को प्रगत कृषि का सहगामी बतलाया था भूमध्यसागरीय देशो - इटली फ्रांस यूनान टर्की मिस्त्र आदि देशो के वर्णन मे नगरो के व्यौरेवार उलेख है और भौतिक दृश्य भूमियो के वर्णन मे स्ट्रैबो ने भूगोल के विभिन्न पक्षो जैसे- भौतिक भूगोल राजनीतिक भूगोल आर्थिक भूगोल और प्रादेशिक भूगोल का समावेश किया है।

पाम्पोनियस मेला - यह दक्षिणी स्पेन का निवासी था। उसने लैटिन भाषा मे अपने भौगोलिक ज्ञान को भागो मे प्रकाशित किया जिसमे पृथ्वी को 5 बृहद भागो मे विभाजित किया गया है। पुस्तक का दूसरा खण्ड डिकोरो ग्राफिया है। जिसमे पृथ्वी को 5 वृहद भागो विभाजित किया है। इस पुस्तक का प्रकाशन 44 ईस्वी मे हुआ था

प्लिनी (23 ईस्वी से 79 तक) यह रोमन का प्रसिद्ध इतिहासकार था इसका अध्ययन विशाल तथा बहु विषयक था उन्होने स्वयं लिखा है। उसने एक शाखे मे दो हजार ग्रन्थो का अध्ययन किया

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/____

जिसमें से बीस हजार मध्य निकाले जो भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थे। प्लिनी ने संसार की लम्बाई तथा चौड़ाई का ज्ञात किया उन्होंने बताया की पृथ्वी की लम्बाई (पुर्व-पश्चिम) उसकी चौड़ाई (उत्तर से दक्षिण) की अपेक्षा अधिक है। उन्होंने पृथ्वी को समुद्र के चारो ओर घिरा हुआ है। इन्होंने यह भी सिद्ध किया मृदा परिवर्तन का मुख्य कारण पृथ्वी का झुकाव है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक प्राकृतिक इतिहास थी जिसमें 37 खण्ड थे प्रथम दो खण्ड में आकाशीय पिंडों पृथ्वी की आकृति एवं गतियों का वर्णन है। तिसरे से छठवे खण्ड में प्रादेशिक भूगोल का वर्णन है। सातवे से ग्यारहवे खंड में जीवन विज्ञान एवं मानव विज्ञान का वर्णन है।

सेनिका (13 B.C से 65 ईस्वी) सेनिका ने अधिकतर भौतिक भूगोल पर लिखा है तथा भूकम्प आने पर के कारण चट्टानों का अपरदन एवं डेल्टाओं का वर्णन है। उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी जिसमें भौतिक भूगोल के अतिरिक्त भौगोलिक अन्वेषण खगोलकी तथा जलवायु विज्ञान का वर्णन किया है। उन्होंने नदियों के अपरदन कार्यों का विश्लेषण किया तथा बताया की नदियाँ अपनी घाटियों का गहरा अपघर्षण द्वारा ही करती हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
माण्डेसपुर, ताखा, बलिया

22/9/2020

Page No.